International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-06-2020; Accepted: 13-07-2020; Published: 28-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 63-65

मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य और अनुशीलन

आशुतोष कुमार द्विवेदी [1], सुलेखा मिश्रा [2]
[1] प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय कन्या महाविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंहविष्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मैत्रेयी पुष्पा सन्–1960,के बाद हिनदी कथा साहित्य में प्रविष्ट हुई और आज अपनी खास पहचान बनाए हुए हैं,उपन्यास औरा कहानी मे कथा के चुनाव का ढंग , प्रस्तुति का अनोखा तरीका और गजब की भाषा –शैली,साथ ही ऐसे –ऐसे चरित्र जिनके बारे में किसी ने शायद ही सोचा हो, लेकर मैत्रेयी पुष्पा का आगमन हिन्दी –साहित्य में हुआ। फरीणीश्वर नाथ रेणु के बाद आँचलिक उपन्यासकार के रुप में मैत्रेयी पुष्पा का नाम उभरकर सामने आया है। बुंदेलखण्ड के आँचल के जनजीवन को लेकर कथा लिखा है, जिसकी परिधि में सम्पूर्ण भारतीय ग्रामीण समाज समा गया है।

मूल शब्द: मैत्रेयी पुष्पा , आँचलिक, स्त्री, बुंदेलखण्ड

प्रस्तावना
मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का अंकन है। 'इदन्नमम्', 'चाक', 'झूलानट', 'अल्माकबूतरी', 'कस्तूरी कुण्डल बसै', आदि के माध्यम से पुरुष समाज द्वारा बनायी गयी नैतिक संहिताओं में जकड़ी नारी की नियति का बेजोड़ चित्र प्रस्तुत करती हैं। इनके उपन्यासों में जो नारी पात्र है वो नारी समस्या की समस्त मान्यताओं को चुनौती देने लगती हैं। उस धर्म, दर्शन, चिंतन समाज खड़ी होती है जो उसको दबाए रखना चाहती हैं। परुष वर्ग का स्वाधीन और नारी जाति का पराधीन रहना अलग–अलग मानसिकता का निर्माण करता है। दोनो की बाह्म प्रगति में भिन्नता होने के कारण परम्परा विरोधी मानसिकता बन जाती है। परुष प्रगति द्वारा भी अधिक स्वाधीन है और समाज की ओर से भी जब तक स्त्री प्रवृत्ति और समाज दोनों की ओर से पुरुष पर निर्भर हैं तब तक पुरुष नारी की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र रहेंगे। मैत्रेयी पुष्पा कोई आदर्श की स्थापना नहीं करना चाहतीं। वह जानती है कि जिस प्रकार स्त्री को पुरुष की आवश्यकता होती है । वह समानता चाहती है।''मैत्रेयी के लेखन का वैशिष्ट्य यह है कि उन्होंने नारी के भीतरी दरवाजे को दस्तक दी है। नारी के सच्चे मन को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आज तक सदियों से दबी जुबान को आवाज देने का प्रयास किया है जब बात सच्ची होती है तो कड़वी भी लगती है। आलोचकों का सामना करना पड़ा है। पर फिर भी लेखनकार्य निरंतर शुरु ही है।''[1] वास्तव में कथाकार अपनी रचना में जिस कथावस्तु को अथवा पात्रों को प्रस्तुत करता है। उसका मूल आधार मानव जीवन के विविध प्रश्न होते हैं। साहित्यिक कलाकृतियों का मूल उद्देश्य मनुष्य चरित्र को जानने का रहा है। मनुष्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती रहा हैं। अनंत काल से मनुष्य अपनी और अपने आस–पास के मनुष्य की खोज कर रहा है। मनुष्य के उसके सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ जानने की जिज्ञासा के कारण ही कलाकृति की निर्मित होती है। आरंभिक समय में असामान्य परुषों या स्त्रियों पर ही कथा लिखी जाती थीं। असाधारण या काल्पनिक घटनाओं की उसमें भरमार हुआ करती थी । वहाँ कथावस्तु को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था। पर कथावस्तु विशुद्ध काल्पनिक या घटना –प्रधान हुआ करती थी। धीरे–धीरे कई विषयों में मनुष्य का अध्ययन अनेक संदर्भों के साथ शुरु हुआ उसको अधिकाधिक यथार्थता के साथ पहचानने की कोशिश शुरु हुई।'' हिन्दी में मुन्शीप्रेमचन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने साहित्य में अभिव्यक्त मनुष्य को अधिक यथार्थ, जीवन और स्वाभाविक बना दिया।''[2] महिला कथा लेखन के संदर्भ में मैत्रेयी की यही भूमिका है कि , मनुष्य अपना चेहरा खोज रहा है। उसे वह कहीं मिलता है , फिर गायब हो जाता है। स्त्री अपने तरीके से जीना चाहती है लेकिन रुढ़ि और परंपराओं के कारण वह चाह कर भी अपने आप में वह परिवर्तन नहीं ला पा रही है जो वह खुद चाहती है। पात्र अथवा चरित्र –चित्रण के माध्यम से कथाकार इस जीवन के विविध रुपों को उपस्थित करता है। लेखिका अपने कथा में यह प्रयत्न करती है कि वह स्त्री के अलग–अलग विशेषताओं को प्रस्तुत कर सकें। नारी का चरित्र और उसका व्यक्तित्व किस प्रकार से निर्मित होता है, इसे बतलाने की चेष्टा करता हैं वह नारी के किया–कलाप को समाज की विभिन्न परिस्थितियों को, उसके गुण–अवगुणों को पात्र के माध्यम से ही बताता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों द्वारा जो चरित्र दिए हैं। वे बेजोड़ हैं। इसी कारणवश इतने कम समय में वे लोकप्रिय हो पायी हैं। चरित्रों का निर्माण करने के लिए तो कथाकार को किसी –न–किसी जीवित व्यक्ति का आधार लेना पड़ता है। लेकिन जीवित व्यक्ति की हूबहू नकल करके कोई उपन्यासकार सफल नहीं होता है। उसे अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करना ही पड़ता है। तब उपन्यासकार अपने एक चरित्र को निर्मित करने के लिए अनेक व्यक्तियों के आकार –प्रकार ,वेशभूषा ,गुणावगुण, स्वभाव लेता है। हिन्दी की नयी पीढ़ी की अत्यंत सजग और संवेदनशील लेखिका के रुप में मैत्रेयी को देखा जा सकता है। इनमें जीवन की एक नयी सच्चाई अत्यंत विश्वसनीय ढंग से पेश की गयी है। इनकी कथाओं में आपसी संबंध ,उनको आगे बढ़ाने वाले पात्र और उनके चरित्र, उनके दुःख दर्द, उनकी आशा –निराशा ,उनके भाव–विचार आदि सब कुछ पाठकों को अत्यंत विश्वसनीय लगते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के कथा – साहित्य में जो नारी विषयक सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक ,धार्मिक ,सांस्कृतिक , शैक्षिक समस्या है उन पर प्रकाश डालने का काम दन उपन्यासों में किया गया है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में नायिका उर्वशी के माध्यम से भारत के किसी भी गरीब स्त्री की त्रासदी को उजागर किया है। सम्पूर्ण कथानक को विन्ध्य के अहीर परिवार इर्द–गिर्द बुना है। उपन्यास के हर पन्ने पर सर्वहारा किसान की यातना के

अनंत चित्र बिखरे हैं। उर्वशी अपने नाम के अनुकूल अप्रतिम सुन्दर ग्रामीण बाला है। अपने भाई और कामांध वृद्ध के कुचक्र में फंसकर वह तिलतिल कर मरने के लिए मजबूर है। उसकी वेदना और शोषण की गाथा को लेखिका ने बड़ी बेरहमी से उकेरा है। सामाजिक और राजनीतिक वीभत्सता की लेखिका ने निडर होकर कटु आलोचना की है। बेतवा नदी के किनारे बसी निर्धन बस्तियों के आपसी संघर्ष, भूख से बिलखते बच्चे, अंधविश्वास और अहम् में लिपटे लोग और नारियों पर होने वाले अत्याचारों की दास्तानों का आँखों देखा हाल मैत्रेयी पुष्पा ने अपने प्रथम उपन्यास में किया है। प्रेम, वासना, घृणा और हिंसा से भरी एक हृदय द्रावक अछूती कहानी पूरे आँचल की व्यथा – कथा है। आँचल में पलनेवाली लड़कियों को बचपन से ही चुप रहने की , अत्याचार सहने की शिक्षा दी जाती है। अंतः अपने ऊपर ढाये गये अत्याचारों को खुली आंखों से सहना नायिका की आदत –सी बन गयी है। लेखिका ने उर्वशी के चरित्र को बहुत ऊँचा उठाया है। उसका त्याग, सेवा, समर्पण सराहनीय है। यातनाओं की आग में तपक रवह अत्यंत दृढ़ बन जाती है। लालची और कुटिल पति के लिए वह एक चुनौती थी । बचपन में चुप रहने वाली उर्वशी आगे चलकर वाकपुट बन गयी है। लेखिका की पूरी सहानुभूति स्त्री –पात्रों के साथ है। इसीलिए सारे स्त्री–यातना पर टिकी है। इसीलिए उपन्यास काल्पनिक नहीं लगता । पिछले अंचल की पिछली जाति के कटु यथार्थ को लेखिका ने निर्ममता से उभारा है। उर्वशी का आत्महत्या का प्रयास , उसके माता–पिता की मजबूरी , बरजोर सिंह जैसे बूढ़े के साथ उसका जबरन विवाह, नन्हें बच्चे को देखने की छटपटाहट और उसकी अकाल मौत पाठकों को रुला देती है। लेखिका ने पात्रों की मनः स्थिति और भावभंगिमा को बखूबी ढंग से उकेरा है। 'इदन्नमम्' उपन्यास विन्ध्य –अंचल के परिवेश को लेकर ही लिखे है। एक आलोचक के विचारों से यदि 'बेतवा बहती रही' विंध्य प्रदेश का 'मैला आँचल' है तो 'इदन्नमम्' उसकी 'परती परिकथा' है। दोनों उपन्यास की नायिकाएँ कामांध पुरुषों की वासना का शिकार होती है, दोनो ही अन्याय का प्रतिवाद करती है। राजेन्द्र यादव ने 'अप्पदीपो भव' में इस उपन्यास पर टिप्पणी करते हुए लिखा है–''बिना किसी बड़बोले वक्तव्य के मैत्रेयी ने गहमागहमी से भरपूर इस कहानी को जिस आयासहीन ढंग से कहा है, उसमें नारी सुलभ चित्रात्मकता भी है और मुहावरे दार आत्मीयता भी।''[3] लगभग चार सौ पृष्ठों के इस उपन्यास को नवोदित लेखिका जब आयासहीन लिखती है तो वह एक प्रकार की उपलब्धि ही है। बऊ, प्रेमा, और मंदा तीन पीढ़ियों की यहा कहानी तीनों को समानांतर भी रखती हैं और एक दूसरे के विरुद्ध भी। राजेन्द्र यादव लिखते हैं–'' मिट्टी पत्थर के ढोकों या उलझी डालियों और खुरदुरी छाल के आसपास की सावधान छँटाई करके सजीव आकृतियाँ उकेर लेने की अद्भुत निगाह है मैत्रेयी के पास लगभग रेणु की याद दिलाती हुई गहरी संवेदना और भावनात्मक लगाव से लिखी गई यह कहानी बदलते, उभरते 'अंचल' की यातनाओं, हार – जीतों की एक निर्व्याज गवाही है पठनीय और रोचक।''[4] मैत्रेयी पुष्पा ने जो आँचल पर लिखा है, वह उन शहरी लेखकों से अलग है, जो केवल लिखने हेतु गांव का दौरा करते हैं। उपन्यास में अनेक सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को उठाया है, जैसे आरक्षण , आयोध्या का मामला, वोटों की राजनीति , पर्यावरण प्रदूषण आदि । पूरे उपन्यास में शोषितों और स्त्रियों की पक्षधरता उभरकर आयी है। यह उपन्यास मुख्यत : बऊ, मंदा, कुसुमाभाभी और परुषों में दादा यानी पंचमसिंह के संघर्ष की कथा हैं। दूयरी बात यह उपन्यास जाति –विशेष की जीवन – पद्धति , रीति –रीवाजों को भी रेखांकित करता चलता है। स्त्रियों में संबंधों के संतूलन की अदृभुत क्षमता होती है, इसका उदाहरण है मंदा। वह माँ और दादी दोनों को सतझती है। दोनों संबंधों को एक–दूसरे से अलग रखकर किसी को भी उसके अधिकार से वंचित नहीं करती। वह सहती भी है। और बिगड़े को संभालती भी है। मंदा अपने जीवन की विषमताओं और कटु अनुभव को सकारात्मक ऊर्जा में बदल कर सोनपुर के उस माफिया से संघर्ष करती है। जो गांव के हर व्यक्ति की आजादी को बंधक बनाए है। लेखिका ने एक और मुद्दा उपस्थित किया है कि अपनी लड़ाई को खुद लड़ना पड़ता है। यदि हम यह कार्य दूसरों से करवाते रहेंगे तब उसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी । मंदाकिनी शोषितों के साथ इसलिए जुड़ जाती है कारण उसकी यातना दो स्तरों की है– एक तो स्त्री होने के नाते सिर्फ उपभोग की वस्तु समझी जाकर बलात्कारिता होती है और दूसरी दुर्बलों के सामान्य शोषण का शिकार बनती है। प्रमुखत : नब्बे के दशक में उभरी और प्रतिष्ठित हुई कथा लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास हिन्दी –उपन्यास धारा में मील का पत्थर माना जा चुका है। राजेन्द्र यादव के शब्दों में –''चाक सामन्ती समाज के भीतर व्यापत हिंसा और स्चार्थों की टकराहट की प्रामाणिक कहानी है। इस समाज का ताना बाना हिंसा और सेक्स से बना है। मैत्रेयी इन दोनों को ही एक कथाकार की निगाह से पात्रों के आचार–विचार औरसोच के रूप में प्रभावशाली ढंग से पकड़ती है। 'चाक' मे बिना बड़बोलेपन के उन्होने गाँव की स्त्री की जिस चेतना का विकास किया है। वह उपन्यास कला पर उनकी पकड़ को रेखांकित करता है।''[5] स्त्री की कथा दृष्टि ही नहीं, उसकी शैली और वाक्य रचना भी परूषों से भिन्न होती है। इसका 'चाक' है। उपन्सयास का आरम्भ रेशम की हत्या से होता है और अंत गुलकंदी , उसकी माँ और बिसुनदेव के जिन्दा जलाने से होता है। स्त्री का शोषण जाने –अनजाने ताकतों से होता आ रहा है। इसलिए इसके खिलाफ गाँव की एक स्त्री सारंग उठ खड़ी होती है। उपन्यास का केन्द्र बिन्दू आगरा के पास अतरपूर गाँव है जिसकी लोकसंख्या लगभग एक हजार है। उसमें ब्राह्मण ,जाट,नाई, खटिक ,हरिजन, बनिया तथा मुसलमान बसे हुए हैं। विगत सदी केक अंतिम चरण का पिछड़ा ग्राम अपने अच्छे –बुरे संस्कार, संस्कृति, भ्रष्टता, मानवीयता एवं अमानवीयता के समस्त पहलुओं के साथ रूपायित किया है। 'चाक' निरंतर परिवर्तन शील जीवन चक्र का प्रतीक है। कोई चाहे या न चाहे बदलाव को कोई रोक नहीं सकता श्रीधर बच्चों के कच्चे मनों को शिक्षा के चाक पर चढ़ाकर उनके समुन्नत व्यक्तित्व निर्माण के कार्य में जुट गया है। स्त्री चेतना को लेकर जिन – जिन उपन्यासों का मुल सृजन हुआ है, उसमें 'चाक' का स्थान महत्वपूर्ण हैं। सारंग की जीवन यात्रा के कई पड़ाव विश्वासपात्र हैं और अविश्वासी भी परंतु महिलाओं पर होनेवाले अत्याचारों के विरोध में खड़ी रहने की शक्ति उसमें हैं। रूढ़ियों का विरोध है और सबको साथ लेकर चलने की इच्छा शक्ति है। 'चाक' उपन्यास की सारंग के चरित्र के कई पहलू लेखिका ने हमारे सन्मुख प्रस्तुत किए हैं। जाटों के घर में गुरूकुल से आनेवाली पहली विद्वान महिला है। मैत्रेयी ने अपने कथाओं में शिक्षा को महत्व देने के पक्ष में कहानियां लिखी हैं। शिक्षा मानव की तीसरी आँख है। अशिक्षित व्यक्ति को आज जीना मुश्किल होता जा रहा है। ''एक लड़के की शिक्षा, एक व्यक्ति की शिक्षा जबकि एक परिवार की शिक्षा है।''

निष्कर्ष

मैत्रेयी एक कथाकार की निगाह से पात्रों के आचार –विचार और सो को प्रभावशाली ढंग से पकड़ती हैं। लुप्त होती हुई लोक धारा और मामूली पात्रों को साहित्य में फिर से स्थान देने का मैत्रेयी का प्रयास सराहनीय है। सभी उपन्यासों में स्त्री को जिन–जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन सभी पर अपने नये मूल्यवान विचार प्रस्तुत किए हैं । नारी –मुक्ति आन्दोलन से जुड़ी होने से और पूरी जिन्दगी ऐसी समस्याओं के साथ जूझने से उनके विचार काल्पनिक नहीं यथार्थ लगते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के

उपन्यासों में आयी विविध नारी समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किए हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी से संबंधित एक भी समस्या ऐसी नहीं छोड़ी जिस पर अपने विचार प्रस्तुत न किए हों।

संदर्भ सूची

1. चिन्हार , अपनी बात , मैत्रेयी पुष्पा, पृ.58
2. हिन्दी में आधुनिकतावाद ,डॉ, दुर्गाप्रसाद गुप्ता, पृ.15
3. राजेन्द्र यादवः इदन्नमम् उपन्यास के प्रारम्भ में पृ.9
4. इदन्नमम् उपन्यास के प्रारम्भ में पृ 9 राजेन्द्र यादव
5. मैत्रेयी पुष्पा –चाक– अंतिम पृष्ठ से
6. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में स्त्री –परूष संबंध, डॉ,नरेन्द्रनाथ त्रिपाठी पृ,105